प्रकाशन तिथि : 15 अगस्त, 2025
प्रेषण तिथि : 19 अगस्त, 2025

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 29 | अंक 11 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

लगन, तत्परता, अनन्यता और एकनिष्ठता से मिलेगी सिद्धिः सरवड़ी

(देशभर में श्रद्धापूर्वक मनाई तृतीय संघप्रमुख पूज्य नारायण सिंह जी रेडा की 85वीं जयंती)

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः - यह बात गीता कहती है। अपने कर्तव्य कर्म में लगे रहने पर व्यक्ति परम सिद्धि स्वतः ही प्राप्त करता है। ऐसा कर्तव्य कर्म करने के लिए ही पूज्य तनसिंह जी ने हमको इस मार्ग पर लगाया और यदि हम यह कर्म करते रहेंगे तो हम भी उस परम सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन उसके लिए लगन चाहिए, तत्परता चाहिए, अनन्यता और एकनिष्ठता चाहिए। ये सभी गुण नारायण सिंह जी में थे इसीलिए उनको वह परम सिद्धि प्राप्त हुई। नारायण सिंह जी ने यह सिद्ध कर दिया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग उपासना का मार्ग है, तपस्या का मार्ग है, भगवान की ओर बढ़ने का मार्ग है और उस मार्ग पर जो जैसी निष्ठा के साथ चलेगा उसे वैसा ही परिणाम मिलेगा। उपर्युक्त बात वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 30 जुलाई को तृतीय संघप्रमुख श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा की जयंती पर जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि पूज्य तनसिंह जी की यह कल्पना थी कि - चाहे एक ही जले, पूरे स्नेह से जले, ऐसे दीप चाहिए। इस कल्पना को पूज्य नारायण सिंह जी रेडा ने साकार किया। उनकी संकल्प शक्ति अनूठी थी। उन्होंने जो एक बार तय कर लिया उस निश्चय को फिर कभी नहीं बदला। उनकी उसी लगन और निष्ठा के फलस्वरुप उनके जीवन में योग घटित हुआ। उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रति हमारी आस्था को बढ़ा दिया। हमारे जीवन में भी संघ कार्य करते हुए जो समता का भाव आता है, जीवन में जो सुख और शांति उतरती है, वह भी कम उपलब्धि नहीं है और यदि हम निरंतर ये कार्य करते रहें तो हमें भी वही प्राप्त होगा जो नारायण सिंह जी को प्राप्त हुआ। केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ ने पूज्य नारायण सिंह जी का जीवन परिचय दिया। संभाग प्रमुख राम सिंह अकदड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया। तनसिंह जी की माताजी मोती कंवर जी द्वारा नारायण सिंह जी के लिए लिखित आलेख का वाचन यशवीर कंवर बैण्याकाबास द्वारा किया गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

समाज का सहयोग ही है संघ की शक्तिः संघप्रमुख श्री

(माननीय संघप्रमुख श्री का गुजरात, जालौर, पाली, बालोतरा व जोधपुर संभाग का प्रवास)

श्री क्षत्रिय युवक संघ पिछले 79 वर्ष से लगातार काम कर रहा है। आप सब ने इसका नाम कभी न कभी सुना है। लेकिन चाहे कोई वस्तु हो, व्यक्ति हो अथवा संस्था हो, उसे केवल नाम से जानना पर्याप्त नहीं है। यदि उसका सच्चा अन्वेषण करना है तो उसके भीतर क्या तत्व भरा है, उसकी क्या विशेषताएं हैं, इसे देखना पड़ेगा। संघ को भी यदि भीतर से जानना है, उसके सही अर्थ में जानना है तो आपको उसको निकट जाकर उसका वास्तविक स्वरूप देखना पड़ेगा और उसका माध्यम है शाखा और शिविर। इसका अर्थ यह नहीं है कि इस प्रकार के अन्य कार्यक्रम उपयोगी नहीं हैं। इन कार्यक्रमों से भी उस मूल कार्य को करने का ऊर्जा और उत्साह मिलता है। आपका सहयोग जिस रूप में भी आप प्रदान करते हैं, उसके लिए संघ सदैव आपका कृतज्ञ है। श्रेष्ठ कार्य को करने में कठिनाई आती है इसलिए सभी उसको करने में सहज रूप से प्रवृत्त नहीं होते। संघ का कार्य भी ऐसा ही कार्य है। यह कर्तव्य पालन का कार्य है, धर्म पालन का कार्य है। यह चढ़ाई का मार्ग है, उर्ध्वगामी मार्ग है। चढ़ाई का मार्ग कष्ट पूर्ण होता है जिसमें शक्ति की आवश्यकता होती है। इसलिए संघ के कार्य के लिए भी शक्ति की आवश्यकता है और वह शक्ति समाज के सहयोग से ही संघ को प्राप्त होती है। उपर्युक्त बात माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बैण्याकाबास ने 29 जुलाई को अहमदाबाद शहर के गोता में स्थित राजपूत सभा भवन में आयोजित पारिवारिक स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेंद्र सिंह बने थल सेना उप प्रमुख

लेफ्टिनेंट जनरल पुष्पेंद्र सिंह ने 1 अगस्त को भारतीय थल सेना के उप प्रमुख का पद संभाला। उत्तरप्रदेश के उन्नाव के मूल निवासी लेफ्टिनेंट जनरल सिंह उप प्रमुख बनने से पहले सेना मुख्यालय में 'डायरेक्टर जनरल ऑपरेशनल लॉजिस्टिक्स एंड स्ट्रैटेजिक मूवमेंट' की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। वे लखनऊ के ला मार्टिनियर कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय और देहरादून स्थित प्रतिष्ठित भारतीय सैन्य अकादमी के पूर्व छात्र रहे हैं। उन्होंने दिसंबर 1987 में 4 पैरा (विशेष बल) में कमीशन प्राप्त किया था। उन्होंने ऑपरेशन पवन, मेघदूत, रक्षक और ऑर्किड सहित कई अभियानों में भाग लिया। (शेष पृष्ठ 7 पर)

लगन, तत्परता, अनन्यता और एकनिष्ठता से मिलेगी सिद्धिः सरवड़ी

बाड़मेर

बीकानेर

हैदराबाद

(पेज एक से लगातार)

कार्यक्रम में जयपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवक एवं समाजबंधु सपरिवार उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त भी पूज्य नारायण सिंह जी की जयंती के उपलक्ष्य में देशभर में अनेक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें स्वयंसेवकों एवं समाजबंधुओं ने शामिल होकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की। बाड़मेर में दानजी की होदी स्थित श्री कृष्णा छात्रावास में भी समारोह पूर्वक जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली ने कहा कि नारायण सिंह जी से प्रेरणा लेकर हम श्रेष्ठ आचरण करते हुए जीवन की समस्त मयार्दाओं का पालन करें और संसार और मानव जाति को भी श्रेष्ठ जीवन की प्रेरणा दें। सांवल सिंह भैंसडा ने नारायणसिंह जी का जीवन परिचय दिया। कार्यक्रम में शिवसिंह महेचा, समंदरसिह देदुसर, नरपतसिंह नवातला, देवीसिह ताणु, राजुसिंह रेडाणा, किशनसिंह गडडा, रेवंतसिंह बच्चिया, जब्बरसिंह, अभयसिंह दानजी की होदी सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित रहे। बाड़मेर स्थित श्री बाहडराव राजपूत छात्रावास में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक कृष्ण सिंह रानीगांव ने कहा कि नारायण सिंह जी द्वारा चरितार्थ मार्ग पर चलना ही उनको सच्ची श्रद्धांजलि है, इसलिए उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन का मार्ग निर्धारित करें और जीवन व्यवहार को संयमित व श्रेष्ठ बनाएं। श्री मल्लिनाथ हॉस्टल बाड़मेर में भी कार्यक्रम हुआ। बाड़मेर स्थित द सक्सेस होस्टल में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें दीप सिंह रणधा व सुरेन्द्र सिंह तेजमालता ने पूज्य रेड़ा का जीवन परिचय दिया। चौहटन स्थित श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक कमल सिंह गेहूं ने कहा कि नारायण सिंह जी के जीवन के प्रत्येक पक्ष से हम कुछ न कुछ सीख सकते हैं। उनसे प्रेरणा लेकर हमें अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाना चाहिए। संघ एक ऐसी पाठशाला है जो हमारे जीवन में संस्कारों का निर्माण करते हुए मानव मात्र के कल्याण हेतु हमें अग्रसर करता है। उदय सिंह देदुसर ने नारायण सिंह जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रान्त प्रमुख लाल सिंह आकोड़ा ने किया। इसके अतिरिक्त चौहटन प्रान्त में दुधवा, आकोड़ा, खारा राठौड़ान और केलनोर में भी कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें कृष्ण सिंह गौहड़ का तला, दुर्जन सिंह दुधवा, कमल सिंह मीये का तला, नरपत सिंह दुधवा, झामन सिंह देदूसर, गेन सिंह इंद्रोई, महेन्द्र सिंह चौहटन, स्वरूप सिंह कुंडा, उतम सिंह चौहटन, गुलाब सिंह दुधवा, बाबू सिंह भाचभर, देवी सिंह भाचभर, मदन सिंह नवापुरा, गेन सिंह हूरों का तला, मूल सिंह केलनोर सहित अनेक स्वयंसेवक व समाजबंधु उपस्थित रहे। शिव प्रांत के भियाड़ गांव में मातेश्वरी शाखा द्वारा भी हर्षोल्लास के साथ जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में शिव प्रांत प्रमुख राजेंद्र सिंह भियाड़ द्वितीय ने कहा कि पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्ग को मानव जीवन के लक्ष्य की आरे बढाने वाला राजमार्ग बताया और पूज्य नारायण सिंह जी ने अपने जीवन के माध्यम से इस बात को सत्य सिद्ध किया। बाड़मेर संभाग के सेडवा प्रांत में तरवर डेर बाखासर में भी जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख कालू सिंह गंगासरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। उन्होंने श्री जय भवानी राजपूत सेवा संस्थान सेड़वा में 20 से 23 सितंबर तक आयोजित होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के बारे में भी जानकारी दी। बाड़मेर में पंवारो की ढ़ाणी (आदर्श उण्डखा) में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें रणवीर सिंह व रायसिंह उण्डखा ने पूज्य श्री के आदर्शो को आज के समाज के लिए प्रासंगिक बताया। मीठड़ा में भी जयंती मनाई गई। गुड़ामालानी स्थित सूर्या हॉस्टल में भी जयंती कार्यक्रम रखा गया जिसमे प्रांत के विभिन्न गांवों से समाजबंधु शामिल हुए। जोगराज सिंह बूठ ने पू. नारायण सिंह जी का परिचय दिया एवं कार्यक्रम का संचालन नारायण सिंह परावा ने किया। कुचामन सिटी स्थित संघ कार्यालय आयुवान निकेतन में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवत सिंह सिंघाना ने पूज्य श्री नारायण सिंह जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला व उनके जीवन से प्रेरणा लेकर निरंतर आगे बढ़ने की बात कही। नागौर के श्री अमर राजपूत छात्रावास में पूज्य नारायण सिंह रेडा एवं राव चंद्रसेन की जयंती संयुक्त रूप से मनाई गई। प्रांत प्रमुख उगम सिंह गोकुल ने पूज्य रेड़ा का जीवन परिचय दिया एवं शयाम सिंह छापडा ने राव चंद्रसेन के संघर्ष, शौर्य और त्याग के बारे में बताया। छात्रावास अध्यक्ष नारायण सिंह भाटी ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में गिरधारी सिंह चार्वडिया, छात्रावास अधीक्षक लक्ष्मण सिंह शेखावत सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित रहे। नागौर के डाबड़ा गांव में स्थित झूंझारजी मंदिर परिसर में भी जयंती मनाई गई। कुचामन प्रांत प्रमुख नत्थू सिंह छापड़ा व डीडवाना प्रांत प्रमुख जयसिंह सागु ने पूज्य नारायण सिंह जी का जीवन

रानीवाड़ा

परिचय देते हुए बताया कि उनका जन्म 1940 में सुजानगढ़ के पास रेड़ा ग्राम में हुआ था। 1950 में बीकानेर में श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर में उनका प्रथम आगमन हुआ और उसके पश्चात जीवनभर श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तन सिंह जी की इच्छानुसार संघ के सभी प्रकार के दायित्वों का निर्वाह करते रहे। नागौर संभाग के लाडनूं प्रांत के सुजानगढ मंडल के भानीसरिया गांव में व बीदासर मंडल के परावा गांव में भी जयंती मनाई गई। बीकानेर स्थित संघ कार्यालय नारायण निकेतन में भी पूज्य नारायण सिंह रेडा की जयंती हर्षोल्लास से मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक उम्मेद सिंह सुल्ताना ने पूज्य श्री रेडा के साथ के अनुभव बताए और कहा कि नारायण सिंह जी ने पारिवारिक भाव से संघ को एक सूत्र में पिरोया। संभाग प्रमुख रेवंत सिंह जाखासर ने कहा कि किसी भी महापुरुष की जयन्ती मनाने का महत्त्व तभी है जब हम उन महापुरुष को अपने जीवन में प्रवेश करने दें। हम भी नारायणसिंह जी की भाँति अपने जीवन को बदलें तथा जैसे उन्होंने तनसिंह जी की सेवा में स्वयं को लगाया वैसे हम भी अपने को समाज की सेवा में नियोजित कर दें। कार्यक्रम में शहर में रहने वाले समाजबंधु सपरिवार सम्मिलित हुए। वरिष्ठ स्वयंसेवक उम्मेद सिंह सुल्ताना व भरत सिंह सेरुणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बीकानेर संभाग के पुन्दलसर (श्रीडूंगरगढ़) व झंझेउ (श्री डूंगरगढ़) में भी कार्यक्रम हुए। जालौर प्रांत में पूज्य नारायण सिंह जी रेडा की जयंती सिरे मंदिर रोड स्थित नागणेची माता मंदिर में मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने नारायण सिंह जी का जीवन परिचय देते हुए आगामी शिविरों के बारे में भी जानकारी दी। ईश्वर सिंह सांगाना, गणपत सिंह सापनी, गोविंद सिंह रटुजा ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन राजेंद्र सिंह भवरानी ने किया। पाली जिले के जैतारण में स्थित वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में भी पूज्य नारायण सिंह जी रेडा की जयंती श्रद्धा पूर्वक मनाई गई। अजित सिंह रूदिया ने कार्यक्रम की भूमिका बताई। संभाग प्रमुख महोब्बत सिंह धींगाणा एवं प्रांत प्रमुख हीर सिंह लोड़ता ने रेडा का जीवन परिचय देते हुए बताया कि मात्र 19 वर्ष की उम्र में अध्यापक की नौकरी त्यागकर उन्होंने पूज्य तनसिंह जी को अपना जीवन अर्पित कर दिया। नारायण सिंह जी ने अपने जीवन में संघ के 272 शिविरों में भाग लिया। जैसे हनुमान ने राम की सेवा की, वैसे ही नारायण सिंह जी ने तनसिंह जी की सेवा की। उन्होंने 1969 से 1989 तक संघप्रमुख का दायित्व निभाया और संगठन में पारिवारिक भाव को सुदृढ़ बनाया। नारायण सिंह जनासानी ने रेडा के साथ बिताए शिविरों के प्रेरणादायक संस्मरण साझा किए। राजपूत छात्रावास के अध्यक्ष कर्नल महेंद्र प्रताप सिंह डिगरना ने अपने संबोधन में क्षत्रिय युवकों से शिक्षा पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। कर्नल रिछपालसिंह सिनला, लक्ष्मण सिंह रायरा, बहादुर सिंह सारंगवास ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम में बिकरलाई, लाटोती, निबोल, झुझण्डा, सबलपुरा, रायपुर, बर, आसरलाई, हाजीवास, निमाज, भुम्बालिया, लाम्बिया, अमपरपुरा, सेवरिया, कोठरिया, डिगरना सहित अनेक गांवों से समाजबंधुओं की मातृशक्ति सहित उपस्थिति रही। सिरोही प्रान्त के उथमण गांव में भी जयंती मनाई गयी जिसमें सुमेर सिंह उथमण और वीर बहादुर सिंह असाडा ने पूज्य श्री नारायण सिंह जी के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में नारायण सिंह खंदरा, विक्रम सिंह केशवना, भागीरथ सिंह लूणोल, नारायण सिंह उथमण सहित अनेक समाजबंधु व मातृशक्ति की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में सभी को यथार्थ गीता की प्रति भेंट की गयी। जालौर संभाग में रानीवाड़ा प्रांत के जाविया गांव स्थित खोडेश्वर महादेव मंदिर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख प्रवीण सिंह सुरावा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। रेवन्त सिंह जाखड़ी ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में रानीवाड़ा प्रांत के चारों मंडलों से समाजबंधु मातृशक्ति सहित शामिल हुए। सांचौर में श्री राव बल्लूजी की छतरी, मुक्तेश्वर महादेव मंदिर नर्मदा कॉलोनी में भी जयंती मनाई गई जिसमें राव मोहन सिंह चितलवाना, हिंदू सिंह दूठवा, महेंद्र सिंह कारोला, प्रेम सिंह अचलपुर, प्रेम कंवर चितलवाना और ईश्वर सिंह चौरा ने पूज्य नारायण सिंह जी को नमन करते हुए अपने विचार रखे। जैसलमेर के मोहनगढ़ में भी पूज्य श्री नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई जिसमें संभाग प्रमुख गणपत सिंह अवाय ने कहा कि नारायण सिंह जी के जीवन का मूल मंत्र अनन्यता और एकनिष्ठता था। ये गुण हमारे जीवन में भी आ जाएं तो हम भी उन्हीं की भांति अपने जीवन को सार्थक कर सकते हैं। जैसलमेर स्थित जवाहिर राजपूत छात्रावास एवं संभागीय कार्यालय तनाश्रम में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें वरिष्ठ स्वयंसेवक हरिसिंह बैरसियाला एवं प्रांत प्रमुख महिपाल सिंह तेजमालता सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जैसलमेर संभाग में श्री राजपूत छात्रावास रामगढ़ एवं राजपूत छात्रावास पोकरण में भी कार्यक्रम आयोजित हुए। चांधन में स्थित भादरियाराय शिक्षण संस्थान में एवं शाखा मैदान, मूलाना में भी कार्यक्रम हुए। म्याजलार प्रांत के बैरसियाला में आयोजित कार्यक्रम में वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबू सिंह बैरसियाला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। जैसलमेर के तेजमालता में भी जयंती मनाई गई जिसमें उम्मेद सिंह जिजनियाली ने पूज्य श्री का जीवन परिचय दिया। **(शेष पृष्ठ 5 पर)**

भियाड़

मुम्बई

तीन दिवसीय 'मीरा दर्शन यात्रा' की वृंदावन में पूर्णाहुति

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा तीन दिवसीय 'मीरा दर्शन यात्रा' 25 से 27 जुलाई तक आयोजित की गई जो मीरां नगरी मेड़ता से प्रारंभ होकर कृष्ण नगरी वृंदावन जाकर समाप्त हुई। भक्त शिरोमणि मीरा बाई के सर्वांगीण जीवन चरित से जनमानस को परिचित करवाने के उद्देश्य से आयोजित इस यात्रा का शुभारंभ 25 जुलाई को मीरा नगरी के नाम से प्रसिद्ध मेड़ता से हुआ जिसके समाचार गत अंक में प्रकाशित हुए थे। इसके पश्चात यात्रा मेड़ता से रासलियावास, भैरुंदा, थांवला, तिलोरा होते हुए ब्रह्म नगरी पुष्कर पहुंची। भैरूंदा में प्रधान जसवंत सिंह थाटा के नेतृत्व में यात्रा का स्वागत किया गया। यहां भोजन और सभा का आयोजन भी किया गया। पुष्कर पहुंचने पर पूर्व राज्य मंत्री धर्मेंद्र राठौड़ और राजपूत समाज के प्रतिनिधियों ने जयमलकोट राजपूत सदन में यात्रा का स्वागत और वंदन किया। यहां से सभी यात्रियों ने पुष्कर नगरी भ्रमण किया और ब्रह्म जी के मंदिर में दर्शन किए। साथ ही पुष्कर सरोवर में विधि विधान से प्रार्थना की गई। संध्याकाल में बूढ़ा पुष्कर में सभा का आयोजन किया गया जिसमें जल संसाधन मंत्री सुरेश रावत, पूर्व राज्य मंत्री धर्मेंद्र राठौड़, भाजपा के प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, जिलापरिषद सदस्य महेंद्र सिंह मझेवला, कांग्रेस नेता महेंद्र सिंह रलावता सहित अजमेर, पुष्कर, केकड़ी, भिनाय और निकटवर्ती क्षेत्र के लोग उपस्थित रहे। 26 जुलाई सुबह से ही तेज बारिश के बावजूद भी बरूण, कालेठड़ा, परबतसर और मंगलाना में पुष्प वर्षा और ढोल-नगाड़ों से यात्रा का स्वागत किया गया। नारायणपुरा में सभा और भोजन के बाद मिठडी, नावां, जोबनेर, कालवाड़ होते हुए यात्रा श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति भवन पहुंची। यहां श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक महावीर सिंह जी सरवड़ी द्वारा सहयोगियों के साथ मिलकर यात्रा का स्वागत किया गया। सरवड़ी ने यहां आयोजित माता मीरा वंदन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मीरा बाई न केवल भक्ति का प्रतीक है बल्कि धैर्य, क्षमाशीलता, कर्तव्य परायणता, प्रेम, करुणा और समाजिक समरसता की भी वाहक है। आज मीरा जी के प्रति हर वर्ग मान सम्मान रखता है और लोग उनके द्वारा सिद्ध किये गए मार्ग पर चलने का प्रयत्न करते हैं। आज भी मीरा नगरी मेडता में चारभुजा नाथ का प्रथम बाल भोग दलित परिवारों द्वारा लगाया जाता है जो कि सैकड़ों वर्षों से चल रही सामाजिक समरसता का प्रतीक है। माता मीरा ने एक पुत्री के रूप में बाल्यकाल मेडता में व्यतीत किया जहाँ उनके दादोसा मेडता के संस्थापक राव दूदा ने बचपन से ही उन्हें भक्ति के क्षेत्र में आगे बढने में सहयोग किया और उनकी हर जिज्ञासा, प्रश्न का समुचित समाधान करते हुए उनके लिए अपने आराध्य श्री कृष्ण की भक्ति की सम्पूर्ण व्यवस्था की। मेड़ता में अखण्ड रुप से संत महात्माओं का आवागमन होता रहता था जिससे मीरा के भक्ति मार्ग को पुष्ट होने मे सहायता मिली। विवाह के पश्चात चितौड़गढ़ जाने पर उनके ससुर राणा सांगा द्वारा पूर्ण मान सम्मान देते हुए इनके भक्ति करने में किसी बाधा को नहीं आने दिया। मीरा बाई के पति भोजराज तो संसार में धर्मप्रेम, सखाभाव और त्याग के अद्वितीय उदाहरण हैं। हमेशा पत्नी धर्म की चर्चा होती है परन्तु युवराज भोजराज ने पति के धर्म की वह लक्ष्मण रेखा खींची जो आजतक सभी के लिए मिसाल है। उन्होंने अपनी पत्नी के ईश्वर पथ पर बढते कदमों से कदम मिलाते हुए पूर्ण श्रद्धा से जीवनपर्यन्त मीरा का संरक्षण करते हुए उनका सहयोग किया। माँ मीरा को पीहर और ससुराल पक्ष से भक्ति पथ में पूर्ण सहयोग मिला। राणा सांगा की मृत्यु के बाद दो-तीन वर्षों का कष्ट मिला था परन्तु केवल कष्ट के नकारात्मक पहलु को ही न देखकर हमें उनके पीहर और ससुराल पक्ष के सकारात्मक भाव और सहयोग को भी स्मरण करना होगा। राजस्थान विधानसभा के पूर्व प्रतिपक्ष नेता राजेन्द्र राठौड़ ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया और कहा कि मेरा जन्म उसी राठौड़ कुल में हुआ जिस कुल में माता मीरा ने अवतार लेकर इस भारतभूमि को भक्ति का सच्चा मार्गदर्शन किया ऐसे कुल परम्परा में जन्म लेना मेरा अहोभाग्य है और हम सभी को माता मीरा जैसी तन्मयता से जीवन पथ में अपने लौकिक कार्य करते हुए ईश्वर की ओर बढना चाहिए जिससे हमारा जीवन सार्थक हो सके। इसके पश्चात 100 से अधिक चौपहिया वाहनों के साथ अनुशासित और भव्य वाहन रैली के रूप में यात्रा झोटवाड़ा, महाराव शेखाजी आर.ओ.बी., पानीपेच, चांदपोल, छोटी चोपड़, बड़ी चोपड़, सुभाष चौक, जोरावर सिंह गेट, रामगढ़ मोड़, जलमहल, आमेर बस स्टैंड होते हुए खेड़ीगेट पार्किंग पहुंची। इस दौरान अनेक स्थानों पर जयपुर वासियों द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। यहां से यात्रीगण श्री जगत शिरोमणि जी मंदिर पहुंचे जहां मंदिर प्रांगण में सभा का आयोजन किया गया। इसके बाद सभी यात्री आरती में शामिल हुए। 27 जुलाई को प्रातः यात्रा के जयपुर से वृंदावन की ओर प्रस्थान से पहले यज्ञ किया गया। यात्रा को रवाना करते हुए महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि आप अपनी क्षमता के अनुसार जितना समाज कार्य कर सकें, उतना करें। हर व्यक्ति की अलग परिस्थिति और क्षमता होती है अतः देखा-देखी की अपेक्षा व्यावहारिक रहकर लगातार समाज को आराध्य मानकर कार्य करते रहे। यह भी भक्ति ही है जिससे मुक्ति भी सुलभ है। इसके पश्चात दौसा में राजपूत छात्रावास में महावीर सिंह दांतली, मनोज राघव और अन्य समाजबंधुओ ने यात्रा का स्वागत किया। यहां से बालाजी मोड़, महवा, खेड़ली, लक्खी का नगला होते हुए यात्रा वृंदावन पहुंची। यहां पर 'मीरा चरित' पुस्तक की रचयिता सौभाग्य कुंवरी राणावत जी के दर्शन करने का सौभाग्य सभी यात्रियों को प्राप्त हुआ। उन्होंने कर्तव्य पालन, अपनी भाषा, संस्कृति, पहनावा, मयार्दा को बचाए रखने पर बल दिया, साथ ही मीरा बाई के जीवन से जुड़े अनकहे पहलुओं पर भी प्रकाश डाला। इसके बाद यात्रा मीरा मंदिर पहुंची। माता मीरा वृंदावन में जब तक रही इसी स्थान पर रही। यहां शालिग्राम की मूर्ति है जिसे वो चित्तौड़ से अपने साथ लाई थी। सभी ने यहां दर्शन लाभ लिया, आरती की और भजन सत्संग किया। यात्रा में राजस्थान के 20 जिलों से 100 से अधिक लोग शामिल रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवंत सिंह पाटोदा यात्रा में सहयोगियों के साथ सम्मिलित रहे।

धंधुका एवं कनाड में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित

गुजरात में धंधुका स्थित राजपूत छात्रावास में 25 से 28 जुलाई तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए भागीरथ सिंह सांढखाखरा ने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारे भीतर सुप्त क्षात्रतेज को उजागर करने का कार्य करता है। इसके लिए आवश्यक साधना यहां शिविर में कराई जा रही है। हम लगातार इस साधना में जुटे रहेंगे तभी हमारे भीतर वह क्षात्रतेज जागृत होगा। शिविर में धोलेरा, साठिडा, खाखरा, भोभलका, आलमपुर सहित क्षेत्र के विभिन्न गांवों से 190 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर के दौरान पूज्य नारायण सिंह जी की जयंती भी मनाई गई। सौराष्ट्र कच्छ संभाग के खोडियार प्रांत के कनाड गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 2 से 4 अगस्त तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन करते हुए मंगल सिंह धोलेरा ने कहा कि जब तक हम अपने आचरण को श्रेष्ठ नहीं बनाते हैं तब तक हमारे भीतर सोई हुई शक्तियां जागृत नहीं होंगी। इसलिए अपने भीतर सद्गुणों को उतारने का निरंतर प्रयास करते रहें। शिविर में अवानिया, कनाड, शामपरा, नारी, नाना, जड़िया, अंबाला आदि गांवों के 118 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

दिल्ली विशविद्यालय में मनाई महाराज अनंगपाल तोमर की जयंती

दिल्ली विशविद्यालय में दिल्ली पति महाराज अनंगपाल तोमर की जयंती श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप युवा शक्ति के तत्वावधान में 28 जुलाई को मनाई गई। कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय में देश के विभिन्न क्षेत्रों के अध्ययनरत राजपूत छात्र शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान गुरुग्राम में आयोजित होने वाले श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर के बारे में भी सभी को जानकारी दी गई।

राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई (महाराष्ट्र) के चुनाव संपन्न

राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई (महाराष्ट्र) के चुनाव 27 जुलाई को संपन्न हुए। चुनावों में मुख्य संरक्षक रघुनाथ सिंह सराणा, चेयरमैन रतन सिंह तूरा, चुनाव समिति अध्यक्ष भवानी सिंह कोटवद, महामंत्री ईश्वर सिंह राजनवाडी एवं समस्त ट्रस्टीगण, आजीवन सदस्यों एवं अन्य गणमान्य समाजबंधुओ की उपस्थिति में सर्वसम्मति से खेत सिंह मेड़तिया बोलागुड़ा को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया, साथ ही नरपत सिंह चिबावत को कार्याध्यक्ष चुना गया।

सीकर प्रांत का मासिक स्नेहमिलन आयोजित

सीकर प्रांत का मासिक स्नेहमिलन 3 अगस्त को भंवर सिंह नाथावतपुरा के आवास पर आयोजित किया गया। बैठक में आगामी शिविर, शाखा व अन्य कार्यक्रमों पर चर्चा की गई। आगामी मासिक स्नेहमिलन कार्यक्रम नन्द सिंह बेड के आवास पर रखा जाना निश्चित किया गया।

संपादकीय

जीवन मूल्यों की एकता और श्रेष्ठता से रुकेगा पारिवारिक विघटन

व्यक्ति समाज की मूलभूत इकाई है और किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण में परिवार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। इसलिए समाज के लिए भी परिवार रूपी संस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण है। कोई संस्कृति और सभ्यता जिन सैद्धांतिक आधारों पर निर्मित होती है उनका व्यावहारिक स्वरूप परिवार में ही विकसित होता है। भारतीय संस्कृति में तो परिवार को और भी अधिक महत्व दिया गया है और इसीलिए आश्रम व्यवस्था में गृहस्थ आश्रम को विशेष स्थान प्राप्त रहा है। भारत में कुटुंब व्यवस्था की सुदृढ़ता के कारण ही भारतीय संस्कृति के अन्य पक्ष भी सहज रूप से पोषित और संरक्षित होते रहे। वर्तमान समय में भी यदि भारतीय संस्कृति के हो रहे पतन के कारणों का अन्वेषण किया जाए तो उसमें परिवार रूपी संस्था में आ रहा विघटन भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारणों में से एक होगा। सामाजिक विमर्श में पारिवारिक व्यवस्था में आ रहे इस विघटन के प्रति विभिन्न स्तरों पर प्रायः चिंता भी व्यक्त की जाती है जो उचित भी है क्योंकि सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते समय जिन परिस्थितियों का सामना कार्यकर्ता को करना होता है उनका उद्गम बहुधा परिवार व्यवस्था के तत्कालीन स्वरूप में ही होता है। इसलिए परिवार के संस्थागत स्वरूप और उसमें आ रहे विघटन के कारणों के प्रति हमारा चिंतन भी अवश्य होना चाहिए।

सामान्यतया जब पारिवारिक विघटन के कारणों का अन्वेषण किया जाता है तब संयुक्त परिवार व्यवस्था का टूटना, आजीविका के अर्जन आदि हेतु परिवार के सदस्यों का अलग-अलग क्षेत्रों में प्रवास, एकल परिवार में बालक-बालिकाओं के पालन-पोषण में आने वाली समस्याओं, तकनीकी साधनों जैसे मोबाइल, टेलीविजन आदि के अत्यधिक उपयोग के कारण आपसी संवाद में कमी, संवेदनशीलता का ह्रास और संबंधों में स्वार्थ के प्रवेश जैसे अनेक कारण इस विघटन के लिए उत्तरदायी बताए जाते हैं। निश्चित रूप से उपरोक्त सभी कारण एक दृष्टिकोण से सही भी हैं और इनमें से जिन समस्याओं का समाधान हम अपने विवेक और व्यवहार से कर सकते हैं, हमें करना भी चाहिए। किंतु यदि हम गहराई से चिंतन करें तो पाएंगे कि इस प्रकार के अधिकांश कारण परिस्थिति जन्य और सतही हैं। उनके मूल में जो समस्या है उसका समाधान किए बिना परिस्थितियों को बदलकर भी इस विघटन को रोका नहीं जा सकता। हम समाज में अपने चारों ओर देखें तो पाएंगे कि अलग-अलग प्रकार की पारिवारिक परिस्थितियों में भी यह विघटन किसी न किसी स्वरूप में विद्यमान है। शहरों में रह रहे एकल परिवारों में कई प्रकार की समस्याएं जन्म ले रही हैं तो ग्रामीण क्षेत्र में रह रहे संयुक्त परिवार भी सही अर्थों में संयुक्त होकर कहां रह पा रहे हैं। अधिक शिक्षा पाकर व्यक्ति यदि स्वार्थी बनता जा रहा है तो अशिक्षित रहकर भी ईर्ष्या और अहंकार के झगड़ों से मुक्ति तो नहीं मिल पाती है। तकनीकी साधनों के बाहुल्य में यदि संवेदनशीलता और स्नेह सूख रहे हैं तो अभावों के संघर्ष भी अनेक बार कटुता के जनक बनते देखे जा सकते हैं।

वस्तुतः परिवार हो अथवा अन्य कोई संस्था या व्यवस्था हो, उसके बाह्य स्वरूप में देश, काल, परिस्थिति के अनुसार कुछ ना कुछ परिवर्तन आना अनिवार्य और स्वाभाविक है। इस प्रकार का परिवर्तन अपने आप में कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसके समाधान के उपाय उस देश, काल, परिस्थिति के अनुसार ना ढूंढे जा सकें बल्कि परिवर्तनशील बाह्य स्वरूप के भीतर जो अपरिवर्तनशील तत्व प्राण रूप में विद्यमान होते हैं, उनके लोप के कारण ही विघटन की समस्या का जन्म होता है। भारतीय संस्कृति की आधार परिवार रूपी संस्था में भी विघटन का मूल कारण यही है कि उसके अस्तित्व में ओतप्रोत इन मूल तत्वों का लोप होता जा रहा है। ये मूल तत्व वे जीवन मूल्य हैं जो हमारे पूर्वज मनीषियों ने अपने आचरण में ढालकर हमें संस्कृति के रूप में प्रदान किए। इसलिए पारिवारिक विघटन को रोकने का वास्तविक उपाय जीवन मूल्यों की एकता और श्रेष्ठता ही है। एक परिवार के सदस्यों के जीवन मूल्यों को निर्धारित करने वाला केंद्र यदि एक हो और वे जीवन मूल्य श्रेष्ठ भी हों तो उस परिवार में विघटन की स्थिति कभी भी उत्पन्न नहीं होगी। लेकिन यदि इन दोनों में से कोई एक भी शर्त पूरी न हो तो विघटन अवश्यंभावी है। यदि जीवन मूल्य एक समान हों लेकिन श्रेष्ठ ना हों तो भी विघटन को रोका नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए यदि परिवार के सभी सदस्य भोग को ही अपना जीवन मूल्य बना लें तो उनका जीवन मूल्य एक होते हुए भी उनमें आपसी संघर्ष और विघटन का वातावरण निर्मित होगा ही क्योंकि असंयमित भोग कोई श्रेष्ठ जीवन मूल्य नहीं है। इसी प्रकार यदि परिवार के सदस्यों के जीवन मूल्य श्रेष्ठ हों लेकिन उन जीवन मूल्यों के स्रोत अलग-अलग हों तो भी परिवार अपना स्वरूप बनाए नहीं रख सकेगा भले ही परिवार के कुछ सदस्य व्यक्तिगत रूप से किसी क्षेत्र विशेष में उन्नति कर लें। जीवन मूल्यों की भिन्नता दृष्टिकोणों की भिन्नता लाती है और यह भिन्नता कालांतर में उस एकता को तोड़ने वाली बन जाती है जो परिवार को बनाए रखने के लिए आवश्यक होती है। अतः हमारे परिवार के जीवन मूल्य श्रेष्ठ हों और उन जीवन मूल्यों का स्रोत अथवा केंद्र एक ही हो, तभी सभी प्रकार की परिस्थितियों को झेलकर भी हमारा परिवार अक्षुण्ण रहकर श्रेष्ठता की ओर बढ़ने की यात्रा पर निरंतर अग्रसर रह सकता है। जैसे यदि हम संघ के स्वयंसेवक हैं और हमारे परिवार के सभी सदस्यों के जीवन मूल्य संघदर्शन के अनुरूप ही बन जाएं तो किसी प्रकार के संघर्ष की संभावना ही नहीं रहेगी बल्कि हमारा परिवार कर्त्तव्य पालन और त्याग के मार्ग पर चलते हुए समाज में अपनी आदर्श भूमिका निभा सकेगा।

श्री क्षत्रिय युवक संघ भी अपने आप में एक विस्तृत परिवार ही है जिसमें समय के साथ अनेक प्रकार के परिवर्तन आने स्वाभाविक और आवश्यक भी है। उदाहरण स्वरूप जब संगठन का स्वरूप व्यापक और विस्तीर्ण होगा तो व्यक्तिगत संपर्क और संवाद की परिस्थितियां भी आज के समान नहीं रह पाएगी। ऐसे ही अनेक अन्य परिवर्तन भी कालान्तर में घटित होने स्वाभाविक ही हैं। लेकिन जो अलौकिक स्नेह, त्याग और पारिवारिक भाव संघ के भीतर उसके प्राण तत्व के रूप में पूज्य श्री तनसिंह जी ने स्थापित किया है, वह जब तक बना रहेगा तब तक उसमें कभी भी विघटन का बीज नहीं पनप सकता। जब तक हम संघ रूपी इस परिवार के सदस्य के रूप में अपने जीवन मूल्यों का केंद्र पूज्य तनसिंह जी के दर्शन को ही बनाए रखेंगे और उसी के अनुरूप कर्तव्य पालन ही हमारा ध्येय बना रहेगा, तब तक हमारा यह परिवार निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहेगा एवं और अधिक विस्तृत होता रहेगा। पूज्य श्री तनसिंह जी ने 'एक भिखारी की आत्मकथा' पुस्तक में संघ परिवार के लिए लिखा है कि यह - 'एक ऐसा कुटुंब है, जिसने शायद इतिहास में पहली बार देश, काल, परिस्थिति, अवस्था और जन्म तक की सीमाओं का अतिक्रमण कर अपने आप का निर्माण किया है।' ऐसे अलौकिक और पवित्रतम परिवार का सदस्य बनने का सौभाग्य हमें पूज्य तनसिंह जी की कृपा से प्राप्त हुआ है, उसके महत्व को समझकर हम इस पवित्रता को बनाए रखें और इसे समाज में और अपने परिवारों में भी प्रसारित करने में सहयोगी बनें।

धीरज सिंह ठाकुर, तरलोक सिंह चौहान, और अपरेश सिंह बने मुख्य न्यायाधीश

धीरज सिंह ठाकुर, तरलोक सिंह चौहान और अपरेश सिंह को क्रमशः आंध्र प्रदेश, झारखंड और तेलंगाना उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। न्यायमूर्ति धीरज सिंह ठाकुर का जन्म 25 अप्रैल 1964 को जम्मू में हुआ एवं उन्होंने जम्मू विश्वविद्यालय से एलएलबी की। उनके पिता देवी दास ठाकुर पूर्व जज एवं जम्मू-कश्मीर के उपमुख्यमंत्री रहे हैं। उनके बड़े भाई तीरथ सिंह ठाकुर भारत के 43वें मुख्य यायाधीश रह चुके हैं। न्यायमूर्ति तरलोक सिंह चौहान का जन्म 09 जनवरी 1964, को रोहरू (हिमाचल प्रदेश) में हुआ। उन्होंने 1989 से वकालत प्रारंभ की एवं 2014 में उच्च न्यायालय में न्यायाधीश बने। न्यायमूर्ति अपरेश सिंह का जन्म 7 जुलाई 1965 को पटना में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से कानून की पढ़ाई की एवं 1990 में वकालत प्रारंभ की। 2012 में वे अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त हुए। उनके परदादा बी.पी. सिन्हा भारत के 6वें मुख्य न्यायाधीश रहे थे।

मलाड (मुंबई) शाखा का एकदिवसीय भ्रमण

श्री क्षत्रिय युवक संघ की मलाड (मुंबई) शाखा के स्वयंसेवकों का एकदिवसीय भ्रमण कार्यक्रम 3 अगस्त को रखा गया। इस दौरान स्वयंसेवकों द्वारा कोंडेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन किए गए। उत्तर मुंबई प्रांत प्रमुख शंभू सिंह धीरा सहयोगियों सहित यात्रा में शामिल रहे।

पूर्वी राजस्थान की शाखाओं का सामूहिक भ्रमण

पूर्वी राजस्थान संभाग की विभिन्न शाखाओं का एक दिवसीय सामूहिक भ्रमण कार्यक्रम 27 जुलाई को रखा गया जिसमें स्वयंसेवकों द्वारा दौसा के सिकराय में स्थित अमोलक धाम का भ्रमण किया गया। कार्यक्रम संभाग प्रमुख मदन सिंह बामणिया के निर्देशन में संपन्न हुआ।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि.	22.08.2025 से 25.08.2025 तक	आसारानाडा, जोधपुर (जोधपुर-जयपुर रेल मार्ग पर) **संपर्क** - विक्रम सिंह आसारानाडा
02.	प्रा.प्र.शि.	23.08.2025 से 25.08.2025 तक	राजपूत छात्रावास, भावनगर (गुजरात)
03.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025	महादेव मंदिर तेजावास रानीवाड़ा, जिला - जालौर (मालवाड़ा ओवर ब्रिज के पास से भीनमाल-रानीवाड़ा हाईवे से दो किमी अंदर) **संपर्क**- सुरेंद्र सिंह तेजावास - 9920208010 शैतानसिंह (फ्रे) तेजावास - 9352480870 रेवन्तसिंह जाखड़ी - 7665005702
04.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	तुलसी चौराहा, डीगाड़ी, जोधपुर (पावटा, जोधपुर शहर से टैम्पो उपलब्ध है)
05.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	बापिणी, फलोदी (ओसियां से आऊ बस मार्ग पर)
06.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	कारंगा छोटा, सीकर (सीकर, फतेहपुर से कारंगा के लिए बस है) **संपर्क**- भगवान सिंह कारंगा 9460912756
07.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	राजपूत छात्रावास, डांगपाड़ा, बांसवाड़ा (उदयपुर बांसवाड़ा मुख्य मार्ग पर लियो कॉलेज के सामने)
08.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	राजपूत समाज भवन, स्यार, केकड़ी (केकड़ी, सरवाड़, फतेहगढ़ से जुड़ा हुआ। **संपर्क सूत्र** - 9680307647
09.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	स्थान मार्ग आदि - पीण्डीया, धड़वा नाडा आश्रम, नागौर (खाटू-नागौर व खाटू-सांजू मार्ग पर) संपर्क - डॉ भंवर सिंह पीण्डीया
10.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	चौहानों की ढाणी, सोहडा, बालोतरा (बायतु से बस द्वारा गिड़ा पहुंचें, आगे साधन उपलब्ध रहेगा।)
11.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	मालपुरा (टोंक)
12	प्रा.प्र.शि. (मातृशक्ति)	30.08.2025 से 01.09.2025 तक	कुकराणा, पाटण, गुजरात (राहिज से बस द्वारा)
13.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	नापासर, बीकानेर **संपर्क** - छैलू सिंह नापासर- 9166403169
14.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025	मादा भाखरी मंदिर, आहोर (जालोर तखतगढ़ रोड पर चरली उतरें, वहां से 4 किमी दूर शिविर स्थल है। साधन उपलब्ध रहेगा।) **संपर्क सूत्र** - मदन सिंह थुम्बा - 9413495628 भरत सिंह मंडला - 9119110165
15.	प्रा.प्र.शि.	30.08.2025 से 02.09.2025 तक	भानीसरीया, लाडनूं (नागौर)
16.	प्रा.प्र.शि.	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	देड़ा, शेरगढ़, जोधपुर (जोधपुर-जैसलमेर रोड पर) **सम्पर्क सूत्र** - बाबू सिंह - 8005834246
17.	प्रा.प्र.शि.	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	जयमल कोट, पुष्कर, अजमेर (25 वर्ष से ऊपर के युवा ही भाग ले सकेंगे।) **सम्पर्क सूत्र** - 7011793431
18.	प्रा.प्र.शि.	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	रताऊ, नागौर डीडवाना मार्ग पर (बोठडी व लाडनूं से साधन उपलब्ध है) **सम्पर्क सूत्र** - डॉ सम्पत सिंह रताऊ
19.	प्रा.प्र.शि.	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	श्री नागाजी मंदिर, खंडप, बालोतरा (सिवाणा से मोकलसर होकर पाली रोड पर खंडप उतरें)
20.	प्रा.प्र.शि.	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	श्री क्षत्रिय करणी सेवा संस्थान, लूणकरणसर, बीकानेर **सम्पर्क**-नारायण सिंह किस्तूरिया 9414403357
21.	प्रा.प्र.शि. (मातृशक्ति)	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	आशापुरा रिजॉर्ट, पचानवा, जालौर (उम्मेदपुर से 4 किमी दूर)
22.	प्रा.प्र.शि.	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	कुंडलेश्वर महादेव, भेव, शिवगंज (भेव से मोछाल मार्ग पर बाईं तरफ 6 किमी)
23.	प्रा.प्र.शि. (मातृशक्ति)	04.09.2025 से 07.09.2025 तक	श्री डूंगरगढ़, बीकानेर **संपर्क** - जेठू सिंह पुंदलसर
24.	प्रा.प्र.शि.	05.09.2025 से 07.09.2025 तक	घाटी दोड़बल्लापुरा, बेंगलुरु (कर्नाटक)
25.	प्रा.प्र.शि.	05.09.2025 से 07.09.2025 तक	गैथला हनुमान जी, लखतर, सुरेन्द्र नगर (गुजरात)
26.	प्रा.प्र.शि. (मातृशक्ति)	05.09.2025 से 07.09.2025 तक	काणेटी, अहमदाबाद, गुजरात
27.	प्रा.प्र.शि.	05.09.2025 से 07.09.2025 तक	मुम्बई (महाराष्ट्र)

गजेन्द्र सिंह आऊ, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ दो का शेष)

लगन, तत्परता...

मोढ़ा में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक साँवल सिंह मोढ़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। इंद्र सिंह की ढाणी में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ। पूज्य श्री नारायण सिंह जी रेडा की जयंती उनके ननिहाल कानसिंह की सिड्डु में स्थित आईनाथ जी मंदिर प्रांगण में भी मनाई गई। कार्यक्रम का संचालन जेठू सिंह सिड्डु ने किया। वरिष्ठ स्वंसेवक कान सिंह अखाधना ने रेडा के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। उपस्थित समाजबंधुओ को यथार्थ गीता की प्रति भी भेंट की गई। बालोतरा संभाग में भी विभिन्न स्थानों पर श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेड़ा की जयंती श्रद्धापूर्वक मनाई गई। बालोतरा स्थित श्री वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में आयोजित कार्यक्रम में चंदन सिंह चांदेसरा, पदम सिंह भाऊडा व सुमेरसिंह कालेवा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। हॉस्टल वार्डन बलवंत सिंह कोटडी विद्यार्थियों एवं स्थानीय समाजबंधुओ सहित उपस्थित रहे। आवासन मंडल बालोतरा में आयोजित कार्यक्रम में प्रांत प्रमुख गोविंद सिंह गुगड़ी ने पूज्य श्री नारायण सिंह जी के जीवन के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन करण सिंह दुधवा ने किया। टापरा गांव में स्थित नागणेची मंदिर में भी कार्यक्रम हुआ जिसमें राणसिंह टापरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। मेवानगर में प्रांत प्रमुख गोविंद सिंह गुगड़ी और हीर सिंह कालेवा समाजबंधुओं सहित उपस्थित रहे। पाटोदी स्थित श्री जवाहर राजपूत हॉस्टल में भी जयंती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक सोहन सिंह कालेवा, नग सिंह हड़मत नगर, वीरम सिंह थोब व संस्थान के अध्यक्ष मोतीसिंह हड़मत नगर उपस्थित रहे। थोब में हुक्म सिंह थोब व रेवाड़ा में रूप सिंह रेवाड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। कल्याणपुर कस्बे में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वीरम सिंह थोब ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए पूज्य नारायण सिंह जी का परिचय दिया। व्याख्याता शंकरदयाल सिंह चारलाई ने भी अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त संभाग में कल्ला रायमलोत हॉस्टल सिवाना, गोल स्टेशन बालोतरा, चांदेसरा, अकदड़ा, मदासर कानोड़, टूंकिया धोरा चांदेसरा, इंदो की ढाणी कानोड़ एवं झरड़ो जी की पाल जाजवा में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। पूज्य नारायण सिंह जी रेडा की जयंती शेरगढ़ प्रांत के सोलंकियातला गांव में स्थित भेरू सिंह अकैडमी के प्रांगण में मनाई गई। प्रांत प्रमुख भीख सिंह सेतरावा ने पूज्य श्री के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला एवं कहा कि संघ का परिचय ही नारायण सिंह जी का परिचय है। उन्होंने पूज्य तनसिंह जी और संघ को ही अपने जीवन का एकमात्र ध्येय बनाया। इस अवसर पर स्वरूप सिंह खारी, माधु सिंह सोलंकियातला, जबर सिंह, रेवत सिंह, ईश्वर सिंह, हुकम सिंह सेतरावा सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित रहे। जोधपुर में राजेंद्र नगर (डिगाड़ी) में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें महेंद्र सिंह गुजरावास व भरतपाल सिंह दासपां सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। अजमेर जिले के सरवाड़ में स्थित श्री क्षत्रिय सभा संस्थान में भी जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक विजयराज सिंह जालियां ने संघ का परिचय देते हुए नारायण सिंह जी के जीवन वृत पर प्रकाश डाला। केकड़ी के प्रांत प्रमुख भगवान सिंह देवगांव ने क्षेत्र में लगने वाले शिविरों की जानकारी दी। कार्यक्रम में श्री क्षत्रिय सभा सरवाड़ के अध्यक्ष नारायण सिंह हिंगोनिया सहित समाजबंधु उपस्थित रहे। उदयपुर स्थित श्री भूपाल नोबल्स संस्थान के ऑल्ड बॉयज भवन में भी कार्यक्रम रखा गया जिसमें ब्रजराज सिंह खारडा ने पूज्य श्री का परिचय दिया एवं भंवर सिंह बेमला ने कार्यक्रम का संचालन किया। बाँसवाड़ा प्रान्त के गनोड़ा में स्थित सीपीएस विद्यालय में भी जयंती मनाई गई जिसमें प्रांत प्रमुख अजयराज सिंह सज्जन सिंह का गड़ा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। शम्भू सिंह लाम्बा पारडा द्वारा नारायण सिंह जी रेड़ा के जीवन के बारे में बताया गया एवं हनुमंत सिंह सज्जन सिंह का गड़ा द्वारा संघ परिचय देते हुए क्षेत्र में लगने वाले आगामी शिविरों की जानकारी दी गई। श्री लक्ष्मण राजपूत छात्रावास, डूँगरपुर एवं अम्बिका बाणेश्वरी छात्रावास, किला परिसर, प्रतापगढ़ में भी कार्यक्रम हुए। चित्तौड़गढ़ प्रांत में श्री एलवा माताजी मंदिर परिसर, डूंगला में कार्यक्रम आयोजित हुआ। राजपूत सभा भवन, मेजा (भीलवाड़ा) में भी जयंती मनाई गई। सीकर प्रांत में सीकर स्थित श्री कल्याण राजपूत छात्रावास में, जय श्री मारवाड़ हॉस्टल में, श्री शक्ति बॉयज हॉस्टल में एवं मीरा गर्ल्स स्कूल नाथावतपुरा में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुए। नाथावतपुरा में स्थित दुर्गा महिला संस्थान में भी जयंती मनाई गई जिसमें चेतना कंवर आलसर ने पूज्य श्री का परिचय दिया। शेखावाटी संभाग के चूरू प्रान्त के गाँव पायली व बण्डवा में भी कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें संभाग प्रमुख खींव सिंह सुल्ताना, वरिष्ठ स्वंयसेवक सुमेर सिंह गुढा व प्रान्त प्रमुख चूरू किशन सिंह गौरिसर सहयोगियों व समाजबंधुओ सहित उपस्थित रहे। जयपुर के निर्माण नगर में 3 जुलाई को श्री भगवान शाखा द्वारा भी जयंती मनाई गई जिसमें केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने बताया कि पूज्य श्री नारायण सिंह ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया कि संघ कार्य करते हुए हम अपने जीवन का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।

(शेष पेज 07 पर)

फरीदाबाद और पांचोटा में मातृशक्ति ने मनाई हरियाली तीज

राजकुल सांस्कृतिक संस्था द्वारा महाराणा प्रताप भवन, सेक्टर-8, फरीदाबाद में हरियाली तीज पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मातृशक्ति द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की गईं। इन गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभागियों के साथ 10वीं व 12वीं कक्षा में 85 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी कार्यक्रम के दौरान पारितोषिक भेंट कर सम्मानित किया गया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के संभाग प्रमुख रेवत सिंह धीरा ने संघ का परिचय देते हुए गुरुग्राम में आयोजित होने जा रहे शिविर में अधिक से अधिक बच्चों को भेजने के लिए माताओं व अभिभावकों से निवेदन किया। अंत में सहभोज भी रखा गया। संस्थान के अध्यक्ष नारायण सिंह शेखावत ने सभी का आभार व्यक्त किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ की पांचोटा (जालौर) मातृशक्ति शाखा द्वारा भी हरियाली तीज पर स्नेह मिलन पांचोटा स्थित श्री नागणेशी माता मंदिर में आयोजित किया गया। सुमन कंवर ने हरियाली तीज के महत्व के बारे में बताया। इस अवसर पर मातृशक्ति द्वारा परंपरागत लहरिया वेशभूषा में लोक नृत्य, सावन के झूले झूलना आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए।

ऐतिहासिक गांव केरा (कच्छ) में राजपूत समाज की बैठक

गुजरात के कच्छ जिले के केरा गाँव में कच्छ के राजपूत युवाओं की एक बैठक 2 अगस्त को आयोजित हुई। बैठक का मुख्य हेतु क्षेत्र के युवाओं को एक साथ लाकर ऐतिहासिक जागृति लाना एवं वर्तमान में ऐतिहासिक तथ्यों और पात्रों के बारे में किये जा रहे दुष्प्रचार को रोकने के लिए सामूहिक प्रयास करने हेतु सूत्रबद्ध करना था। उल्लेखनीय है कि केरा (पौराणिक नाम-कपिलकोट) कच्छ की एक प्राचीन राजधानी है जिसकी स्थापना 11वीं सदी में हुए महान पराक्रमी समा वंशी क्षत्रिय राजा लाखाजी फुलाणी द्वारा की गई थी। बैठक में महान राजा लाखाजी फुलाणी के इतिहास एवं यहां के स्थापत्य से जुड़ी ऐतिहासिक जानकारियों को भी साझा किया गया।

मीरां सती के मंदिर और हिंदवा पीर खंगार मन्दिर में किया यज्ञ

जैसलमेर जिले के मूलाना ग्राम पंचायत मुख्यालय पर गांव के दक्षिणी वास में स्थित सती मीरां के मंदिर में एवं हिंदवा पीर श्री खंगार जी के मन्दिर में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें चांधन प्रांत प्रमुख उम्मेद सिंह बडोड़ा गांव सहयोगियों सहित शामिल रहे। उल्लेखनीय है कि दोहट राठौड़ों की वंशावली और संक्षिप्त इतिहास के अनुसार सिहाजी राठौड़ के पुत्र सोनंगजी के वंशजों का ईडर पर शासन रहा। ईडर क्षेत्र में रहने से ईडरिया राठौड़ कहलाए। सोनंगजी के वंशजों के वैवाहिक संबंध अमरकोट के सोढा परमारों में होने के कारण सोनंगजी के चौथे वंशज चूण्डराजजी अपने मामा अमरकोट के तत्कालीन शासक राणा सोमेश्वरजी सोढा से मिलने गये। इस दौरान सूमरा, नोहड़ी, सिराही आदि मुस्लिमों से हुए युद्ध में सोढों को चूंडराजजी ने सैन्य सहायता प्रदान कर सहयोग किया। अमरकोट की विजय हुई। इसके उपरांत चूंडराजजी के वंशज दोहट राठौड़ कहलाए और अमरकोट राणा ने बारह गांव भेंट स्वरूप प्रदान किए। चूण्डराजजी के आठवें वंशज वांढाजी के वंशजों का वांढा धड़ा कहलाया। वांढा जी के सातवें वंशज जोगराजजी की धर्मपत्नी मीरां जी अपने पुत्र भीमाजी के वीरगति को प्राप्त होने पर उनके साथ सती हुई। सती का थान आज भी सिंध के धूम्बाला गांव में स्थित है।

राजेन्द्र सिंह सेखाला बने सहायक आचार्य

जोधपुर जिले के सेखाला बावड़ी गांव के निवासी राजेंद्र सिंह पुत्र देवी सिंह का चयन सहायक आचार्य (हिन्दी) के पद पर हुआ तथा उन्होंने 26 जुलाई को श्री घमंडीराम केवलजी गोवाणी राजकीय वाणिज्य-कला महाविद्यालय, भीनमाल में कार्यभार ग्रहण किया।

मान्या शक्तावत ने घुड़सवारी में बनाया विश्व रिकॉर्ड

भीलवाड़ा जिले के कुचलवाड़ा खुर्द गांव की मूल निवासी एवं वर्तमान में जयपुर में निवासरत 16 वर्षीय मान्या शक्तावत ने 50 घंटे लगातार घुड़सवारी का विश्व रिकॉर्ड बनाया है। मान्या शक्तावत ने 22 जुलाई सुबह 4:20 बजे से 24 जुलाई सुबह 9:20 बजे तक लगातार 50 घंटे घुड़सवारी कर यह रिकॉर्ड बनाया। इस दौरान मान्या ने रॉयल इक्वेस्ट्रियन क्लब, जयपुर में मॉक डिफेंडर, किट कैट, मरुधरा किंग, मिस ग्लैंज, बद्री, थंडर बोल्ट, विराट, भीम, नकुल, अभिमन्यु जैसे 21 घोड़ों की बारी-बारी से सवारी की। मान्या के पिता कैप्टन मुकेश सिंह शक्तावत व माता वंदना राठौड़ दोनों पायलट हैं।

भंवर सिंह देवगांव को मुंशी प्रेमचंद साहित्य सम्मान

अजमेर जिले के देवगांव निवासी भंवर सिंह को जयपुर के दुगार्पुर में स्थित सियाम सभागार में 3 अगस्त को अखिल भारतीय कायस्थ महासभा जयपुर द्वारा मुंशी प्रेमचंद साहित्य सम्मान से सम्मानित किया गया। भंवर सिंह हिंदी एवं डिंगल भाषा में लेखन करते हैं।

महोबा, धानेरा और श्रीनाथद्वारा में हुई बैठकें

उत्तरप्रदेश के महोबा में 9 अगस्त को एक बैठक का आयोजन हुआ जिसमें क्षेत्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविर का आयोजन एवं अन्य सांघिक गतिविधियों को लेकर चर्चा की गई। संघ के बुन्देलखण्ड प्रांत प्रमुख जितेन्द्र सिंह सिसरवादा सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। पालनपुर प्रांत में धानेरा तहसील के बीछींवाडी गांव में 3 अगस्त को एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें धानेरा में होने वाले प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर की तैयारियों पर चर्चा की गई एवं संपर्क हेतु दल बनाकर दायित्व सौंपे गए। पालनपुर प्रांत प्रमुख अजीत सिंह कुणघेर सहयोगियों सहित बैठक में उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के राजसमन्द प्रांत की कार्ययोजना बैठक 2-3 अगस्त को श्रीनाथद्वारा में आयोजित हुई जिसमें संभाग प्रमुख भंवर सिंह बेमला सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बैठक में आगामी महाराणा राज सिंह जी जयंती, आगामी शिविर, शाखाएं, संघशक्ति-पथप्रेरक सदस्यता, साहित्य एवं माननीय संघप्रमुख श्री के मेवाड़ प्रवास पर चर्चा की गई।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ एक का शेष)

समाज का...

उन्होंने कहा कि राजपूत के रूप में, क्षत्रिय के रूप में यदि हमको अपनी पहचान कायम रखनी है तो उसके लिए हमें अपने धर्म का पालन करना पड़ेगा। उसके अलावा कोई उपाय नहीं है। आज का संसार बहुत जागरूक हो गया है, उसको धोखा नहीं दिया जा सकता। आज का संसार केवल बाह्य स्वरूप नहीं देखता बल्कि भीतर क्या है वह भी देखने का प्रयास करता है। इसलिए अपने पूर्वजों से हमें जो थाती मिली है उसे हमें सहेजना है और अगली पीढ़ी को सौंप कर जाना है। वह थाती हमें उपभोग के लिए नहीं मिली है। यद्यपि सेवा की शुरूआत भी स्वयं से ही करनी होती है। यदि मेरा भाई स्वयं तो भूखा बैठा है और मैं किसी और की सेवा करने का दावा करता हूं तो वह पाखंड ही है। इसलिए हमें प्रारंभ तो अपने परिवार से, अपने समाज से ही करना है लेकिन वहीं तक सीमित नहीं रहना है बल्कि उस सेवा के दायरे को बढ़ाते हुए प्राणी मात्र की सेवा में अपने को नियोजित करना है तभी हम क्षात्र धर्म का पालन करने वाले बनेंगे। मेवाड़ वागड़ राजपूत समाज अहमदाबाद एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के अहमदाबाद शहर प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम पूज्य श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। श्री मेवाड़ वागड़ राजपूत समाज के अध्यक्ष प्रताप सिंह जोगीवाडा ने संस्था की कार्य प्रणाली एवं कार्य विस्तार के बारे में जानकारी दी एवं संस्था की ओर से संघ की दो शाखा शुरू करने की बात कही। श्री राजपूत विद्यासभा के अध्यक्ष अश्विन सिंह सरवैया ने श्री राजपूत विद्यासभा के कार्य के बारे में जानकारी दी। खेत सिंह चांदेसरा ने संघ एवं पूज्य श्री तनसिंह जी का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन अहमदाबाद शहर प्रांत प्रमुख दिग्विजय सिंह पलवाड़ा ने किया। माननीय संघप्रमुख श्री 27 से 31 जुलाई तक गुजरात प्रवास पर रहे। 27 जुलाई को वे सूरत शहर पहुंचे एवं वहां लग रही शाखाओं के स्वयंसेवकों से संवाद किया। तत्पश्चात श्री महर्षि स्कूल गोडादरा में पारिवारिक स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें संघप्रमुख श्री ने कहा कि आज हमारा समाज अपनी पहचान को खो रहा है। हम अपने पूर्वजों के पदचिह्नों पर नहीं चल पा रहे हैं। इस पीड़ा से पीड़ित होकर ही पूज्य श्री तनसिंह जी ने संघ की स्थापना की। संघ अपनी गीता आधारित सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली के माध्यम से समाज को पुनः उसी गौरवशाली परंपरा की ओर उन्मुख कर रहा है जिसका पालन हमारे पूर्वजों ने किया था। केंद्रीय कार्यकारी धर्मेन्द्र सिंह आंबली सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन दक्षिण गुजरात संभाग प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा ने किया। इसके पश्चात संभाग के स्वयंसेवको के साथ मिलन कार्यक्रम सूरत शहर से 30 किलोमीटर दूर एक फार्म हाउस में रखा गया जिसमें वर्ष भर के कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई गई। अगले दिन 28 जुलाई को सुबह संघप्रमुख श्री सूरत से रवाना होकर वडोदरा पहुंचे। वडोदरा के मकरपुरा में स्थित श्री राजपूत समाज भवन में श्री कच्छ कठियावाड़ राजपूत एसोसिएशन वडोदरा एवं श्री राजपूत एसोसिएशन वडोदरा के तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में कच्छ कठियावाड़ राजपूत एसोसिएशन वडोदरा के अध्यक्ष के बी जाडेजा एवं गुजरात राजपूत समाज संकलन समिति के संस्थापक विक्रम सिंह ने अपने विचार रखते हुए सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने के लिए मिलकर कार्य करने की बात कही। विक्रम सिंह जी ने समाज के नए बोर्डिंग हाउस का लोकार्पण संघ का शिविर लगाकर करने की इच्छा व्यक्त की। केंद्रीय कार्यकारी धर्मेंद्र सिंह आंबली ने पू. तनसिंह जी एवं संघ परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन चरोतर प्रांत प्रमुख अरविंद सिंह काणेटी ने किया। इसके पश्चात संघप्रमुख श्री वडोदरा से सड़क मार्ग से आणंद पहुंचे। यहां आर्य समाज भवन आणंद में एक पारिवारिक स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें आर्य समाज आणंद के अध्यक्ष पूर्व विधायक जसुभा मोगर एवं श्री कच्छ कठियावाड़ राजपूत समाज आणंद के योगेंद्र सिंह माथक उपस्थित रहे। पराक्रम सिंह गोदावरी व पूर्ण सिंह पिपासर ने स्थानीय समाजबंधुओ के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। यहां से सड़क मार्ग से संघप्रमुख श्री अहमदाबाद के काणेटी गांव पहुंचे जहां 29 जुलाई को जटुभा काणेटी के आवास पर मध्य गुजरात संभाग के स्वयंसेवकों का मिलन कार्यक्रम रखा गया। संघप्रमुख श्री ने सभी स्वयंसेवकों से कहा कि आगामी 2 वर्ष तक आप स्वयं तनसिंह जी है, यह मानकर संघ का काम करें। इसके पश्चात संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में श्री राजपूत समाजवाडी में एक पारिवारिक स्नेहमिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ। श्री राजपूत विकास संघ साणंद के प्रमुख हरपाल सिंह खोडा व जितेंद्र सिंह काणेटी ने भी अपने विचार रखते हुए संघ के कार्य को सभी के लिए प्रेरक बताया। कार्यक्रम में साणंद तहसील के विभिन्न गांवों से समाजबंधु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन देवेंद्र सिंह काणेटी ने किया। इसके बाद अहमदाबाद के गोता में स्नेहमिलन कार्यक्रम रखा गया। यहां से माननीय संघप्रमुख श्री सुरेंद्रनगर पहुंचे जहां 30 जुलाई को उनके सान्निध्य में श्रद्धेय नारायण सिंह जी रेडा की जयंती मनाई गई। केंद्रीय कार्यकारी धर्मेंद्र सिंह आंबली, दक्षिण गुजरात संभाग प्रमुख खेत सिंह चांदेसरा एवं दिग्विजय सिंह पलवाड़ा पूरी यात्रा में साथ रहे। 31 जुलाई को संघप्रमुख श्री जालौर संभाग के प्रवास हेतु रवाना हुए जहां उनके सान्निध्य में जालौर संभाग के सांचौर व रानीवाड़ा प्रांत का स्नेहमिलन जाखड़ी गांव में रेवंत सिंह के आवास पर आयोजित हुआ। इसके पश्चात सिरोही में भी कार्यक्रम रखा गया। जालौर में संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी के आवास पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। माननीय संघप्रमुख श्री 1 अगस्त को पाली संभाग के प्रवास पर रहे जहाँ सर्वप्रथम उन्होंने खिन्दारा गांव स्थित प्राचीन खेड़ा देवी माताजी के मंदिर में दर्शन किये जहाँ संघ की नियमित शाखा लगती है। तदुपरांत मंदिर परिसर में आयोजित स्नेहमिलन कार्यकम को संबोधित किया और कहा कि भौतिक चकाचौंध से व्यक्ति अपने स्वाभाविक गुण भूल जाता है एवं संकीर्ण मानसिकता को प्राप्त हो जाता है। इसलिए हमें ऐसी चकाचौंध से दूर होकर विस्तीर्ण दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। इसके उपरांत संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में मांडल में दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की बैठक आयोजित की गई एवं संभाग की वार्षिक कार्ययोजना पर चर्चा हुई। इसके पश्चात संघप्रमुख श्री सुमेरपुर के निकट खिवाँदी गाँव में शहीद फ्लाइट लेफ्टिनेंट ऋषिराज सिंह के निवास स्थान पहुंचे एवं शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिजनों को ढांढस बंधाया। तदुपरांत उन्होंने खिवाँदी गाँव में लगने वाली मातृशक्ति शाखा द्वारा आयोजित स्नेहमिलन को संबोधित किया और कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ अनुभव का विषय है इसलिए शाखा एवं शिविर से ही हम इसे समझ सकते हैं। माननीय संघप्रमुख श्री 2 अगस्त को बालोतरा संभाग के प्रवास पर रहे जहां सिवाना प्रांत के स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन पादरड़ी स्थित अंजनी नगर में हिन्दू सिंह सिणेर के आवास पर रखा गया। कार्यक्रम में संघप्रमुख श्री ने कहा कि संघ कार्य में निरंतरता एवं नियमितता महत्वपूर्ण है। संघमार्ग अनुभूत, स्वाभाविक, समयानुकूल एवं प्रमाणित भी है और वर्तमान में क्षात्रधर्म पालन के अभ्यास हेतु हमारे लिए सर्वाधिक श्रेयस्कर है। सिवाना स्थित कल्ला रायमलोत राजपूत छात्रावास एवं भगवती छात्रावास में लग रही दैनिक शाखाओं के स्वयंसेवकों से भी संघप्रमुख श्री ने भेंट की। कार्यक्रम में संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी व वरिष्ठ स्वयंसेवक अमरसिंह अकली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बालोतरा में माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में कार्यक्रम आयोजित हुआ। उपस्थित स्वयंसेवकों से संवाद करने हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि इस संसार में अच्छाई और बुराई दोनों विद्यमान है। अच्छाई को ग्रहण करना कठिन कार्य है क्योंकि उसके लिए सतत अभ्यास और परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए हमें संकल्प पूर्वक नियमित व निरन्तर श्रेष्ठ आचरण का अभ्यास करना चाहिए। माननीय संघप्रमुख श्री 3 व 4 अगस्त को जोधपुर संभाग के प्रवास पर रहे जहां उनके सान्निध्य में 3 अगस्त को बालेसर (शेरगढ़ प्रांत) एवं बेदू (ओसियां प्रांत) में और 4 अगस्त को पीलवा (फलोदी प्रांत) एवं जोधपुर स्थित तनायन कार्यालय में स्नेहमिलन कार्यक्रम रखे गए। इन कार्यक्रमों में स्वयंसेवकों से संवाद करते हुए उन्होंने कहा कि लोक संपर्क से ही लोक शिक्षण संभव है और लोक शिक्षण से ही लोक संग्रह सम्भव होता है। हम सबको मिलकर एक सामूहिक शक्ति का सृजन करना है। जिस प्रकार देवताओं और असुरों के युद्ध में देवताओं के सामूहिक तेज से जगत कल्याणी मां जगदंबा का रूप निर्मित हुआ उसी प्रकार हमें एक सामूहिक शक्ति का निर्माण करने के लिए अपनी-अपनी प्रिय वस्तु का त्याग करना होगा चाहे वह हमारा समय हो या फिर भौतिक सुख। दिए बिना कुछ मिलता नहीं और किए बिना कुछ होता नहीं, यह तय है। यह शाश्वत सनातन नियम है।

(पृष्ठ पांच का शेष)

लगन, तत्परता...

मनुष्य जीवन का उद्देश्य केवल उदर पूर्ति नहीं वरन परमेश्वर की सृष्टि के संचालन के योगदान देना है। संघ हमें उसकी ओर अग्रसर करता है। कार्यक्रम का संचालन भरतसिंह झाक ने किया।

मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले में पावागढ़ शक्तिपीठ पिपल्या मण्डी में भी जयंती मनाई गई जिसमें सज्जनसिंह नारायणगढ़ ने पूज्य श्री रेड़ा का जीवन परिचय दिया। तेजपाल सिंह धारियाखेड़ी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन जितेन्द्र सिंह सोनगरा ने किया। 27 जुलाई को जयपुर के महेशनगर में श्री आयुवान साप्ताहिक शाखा द्वारा अधिकतम संख्या दिवस के रूप में जयंती मनाई गई। जयपुर संभाग प्रमुख रामसिंह अकदड़ा ने कहा कि पूज्य नारायण सिंह जी का जीवन चरित्र हमें संघ के प्रति समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा देता है। हम भी समाज में अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाएं तथा समाज की थाती में अपना योगदान दें। कार्यक्रम का संचालन कमल सिंह बुड़ीवाड़ा ने किया। मुंबई की मलाड़ शाखा में भी पूज्य श्री नारायणसिंह जी रेड़ा की जयंती मनाई गई। श्री रेडा का परिचय मदनसिंह नरसाणा ने दिया। नारायणसिंह रेवत ने नाशिक में लगने वाले शिविर की जानकारी देते हुए सभी से शिविर में चलने का निवेदन किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक नीरसिंह सिंघाना ने कहा कि नारायणसिंह जी संघ के आदर्श स्वयंसेवक बनें और उसी के फल स्वरुप उनके जीवन में योग प्रकट हुआ। इसी प्रकार हम भी संघकार्य करते हुए जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन शम्भूसिंह धीरा ने किया। पुणे में सिंहगढ़ रोड स्थित दत्तवाड़ी में मैं प्रताप शाखा द्वारा जयंती कार्यक्रम आयोजित किया गया। 27 जुलाई को महाराष्ट्र संभाग के दक्षिण मुंबई प्रान्त के मुंबई शहर मंडल की तनेराज शाखा (गिरगांव चौपाटी) में और उत्तर मुंबई प्रांत के भायंदर मंडल की नारायण शाखा में भी जयंती कार्यक्रम रखा गया। दक्षिण भारत संभाग के पिंपरी-चिंचवड प्रांत में रावल मल्लीनाथ शाखा स्थल जोगर्स पार्क में भी जयंती मनाई गई। 27 जुलाई को हैदराबाद और बेंगलुरु में भी पूज्य नारायण सिंह जी की जयंती मनाई गई। गुजरात में पालनपुर प्रांत में जागीरदार राजपूत छात्रावास धानेरा, रामजी मंदिर पांथावाडा, वीर वच्छराज शाखा वडगाम, दुगार्दास राठौड़ शाखा मेनपर, सती मां बालिका शाखा मेनपर, पालनदेव शाखा, झाँझर सोसायटी, पालनपुर एवं वीर वीरमदेव शाखा, मेजरपुरा में जयंती मनाई गई।

(पृष्ठ एक का शेष)

लेफ्टिनेंट जनरल... लेबनान और श्रीलंका में संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में भी उन्होंने सेवा दी है। देश के प्रति उनकी विशिष्ट सेवा के लिए उन्हें अति विशिष्ट सेवा मेडल और सेना मेडल (बार सहित) से सम्मानित किया जा चुका है।

भंवर सिंह मोरखाना को पितृशोक

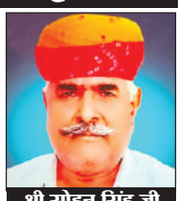
श्री सोहन सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक भंवर सिंह मोरखाना के पिता **श्री सोहन सिंह जी भाटी** का देहावसान 6 अगस्त 2025 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

उम्मेद सिंह बडोड़ा गांव को पितृशोक

श्री कल्याण सिंह जी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक उम्मेद सिंह बडोड़ा गांव के पिता **श्री कल्याण सिंह जी भाटी** का देहावसान 3 अगस्त 2025 को हो गया। पथप्रेरक परिवार परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता है।

श्रीमान्

खेत सिंह जी

मेड़तिया बोला गुड़ा के राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई (महाराष्ट्र) के अध्यक्ष बनने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

शुभेच्छु :

- पाबूदान सिंह दौलतपुरा
- कालू सिंह सालवा खुर्द
- ईशवर सिंह जागसा
- नारायण सिंह पुरण
- बहादुर सिंह भैंसड़ा
- राजू सिंह केतु
- महिपाल सिंह भुरटिया
- विक्रम सिंह रोड़ा
- परबत सिंह डूंगरी
- रणवीर सिंह अर्जुनपुरा

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org